हिंदी का बढ़ता रूतबा

डॉ. सौरभ कुमार

हाल में भारत में संपन्न G-20 शिखर सम्मेलन में अमेरिका के अधिकारी मार्गरिट मैकलियोड हिंदी में बातचीत करके भारत सहित दुनियाभर में प्रसिद्ध हो गयीं। यानी कि आज हिंदी में बातचीत Low Status की चीज नहीं मानी जाती है। बल्कि यह आपको नयी पहचान दिलाती है। केन्द्र सरकार के कर्मचारी होने के नाते आप सभी को मुफ्त में हिंदी सीखने का मौका और समय मिला है। साथ ही हिंदी सीखने पर प्रोत्साहन राशिभी दी जाती है। जबकि देश और दुनिया भर के लोग हिंदी सीखने के लिए अपना पैसा और समय खर्च कर रहे हैं। अमेरिकी सरकार अगले वर्ष 1 सितंबर से अपने यहां के 1 लाख स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई शुरू कर रही है। यानी कि वे कम से कम 1 लाख हिंदी शिक्षक कोनियुक्त करेंगे। फिजी, त्रिनिदाद, टैबोगो, कनाडा, सउदी अरब आदि देशों में हिंदी बोलने वाले की अच्छी संख्या है। एक अनुमान है कि आने वाले दशकों में आर्थिक अवसरोंके लिए हिंदी चौथे नंबरकी बड़ी भाषा होगी। विगत वर्षों में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति श्रीमान् डोनाल्ड ट्रंप भारत की यात्रा पर थे। मौजूदा समय में व्यापारिक, सांस्कृतिक सहित कई पक्ष चर्चा का विषय बना हुआ है। इन्हीं पक्षों में एक महत्वपूर्ण पक्ष है – भाषा। यह जानते हुए भी कि भारत के मंत्रियों, लालफीताशाहों और बुद्धिजीवियों में अंग्रेजी का प्रभाव अधिक है, माननीय पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति और उच्चाधिकारियों ने हिंदी भाषा को अधिक तवज्जो दी। अमेरिकी पूर्व राष्ट्रपति ने कुल पांच ट्वीट किए, जिनमें चार हिंदी में थे। इसके अलावा अहमदाबाद के भाषण में भी हिंदी के कई शब्द इस्तेमाल किए। जाहिर है कि श्रीमान् ट्रंप हिंदी को महत्व देकर भारत के साथ व्यापारिक-सांस्कृतिक उद्देश्य पूरा कर रहे थे, साथ ही अमेरिकी भारतीयों में अपनी राजनीतिक जमीन तैयार कर रहे थे। दरअसल दुनिया भर में भारतवंशियों की तादाद देश-विशेष की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण होती जा रही है।

दरअसल आजादी से पहले से भारतवंशी दुनिया के कई देशों में पलायन किये। इनके साथ इनकी भाषा भी गई। सूरीनाम, त्रिनिदाद, गुयाना, फिजी, मॉरिशस, कनाडा आदि कई देशों मेंये मजदूर 18वी-19वीं सदी में कलकत्ता, डालटेनगंज आदि पोर्ट से मजबूरी और धोखे से ले जाये गये थे। वहाँ मालिकों के द्वारा इनका शोषण किया गया। इनसे बहुत अधिक काम लिया गया। विरोध करने पर इन्हें पीटा और मारा गया। परंतु इन मजदूरों ने हार नहीं मानी।संघर्ष किया। इन मजदूरों के संघर्ष का साथी इनकी भाषा बनी। उसका साहित्य, गीत बना। अपनी भाषा के गीत गाकर वे अपने दुख-दर्दों भूल जाते थे। रामचरित मानस के राम से शक्ति प्राप्त करते थे। हनुमान चालीसा के पदों को गाकर दुखों के पहाड़ को झेल जाते थे। इन मजदूरों ने महाभारत के पांडव की तरह अपने अधिकारों की लंबी लड़ाई लड़ी और विकास किया। कल के इन मजदूरों के वंशज आज इन देशों में व्यापारी हैं, राजनीतिज्ञ हैं, बड़े पदों पर अधिकारी आदि हैं। आपको आश्चर्य होगा कि मॉरिशस के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री प्रवीन्द जुगनॉथ के दादा जी स्वर्गीय गोबरधन यादव मजदूरी के लिए मॉरिशस ले जाये गये थे। इन्होंने विकास किया, परंतु अपनी भाषा, संस्कृति, खान-पान को नहीं छोड़ा। उसे भी बनाये रखा। यही कारण है कि फीजी की राजभाषाओंमें हिंदी का भी स्थान है। मॉरिशस में बड़ी संख्या में लोग हिंदी बोलते हैं। सूरीनाम, त्रिनिदाद, यूनाइटेड स्टेट आदि देशों में हिंदी बोली-समझी जाती है। इन देशों के अलावा भारत के पड़ोसी देश नेपाल में हिंदी बोलनेवालों की अच्छी संख्या है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, तुर्की, वर्मा, बांग्लादेश आदि भारत के पड़ोसी देशों की भाषाओं और हिंदी का गहरा संबंध रहा है। इसीलिए हिंदी बोलने-समझने वाले इन देशों की भाषाओं को आसानी से समझ लेते हैं।

इन देशों के अलावा बड़े स्तरों पर भारतवंशी अमेरिका, फ्रांस, रूस आदि देशों में रहते हैं, जो इन देशों में हिंदी को बढ़ावा दे रहे हैं। इस तरह से विश्व में हिंदी जाननेवालों की संख्या डेढ़ अरब के करीब है तथा दुनिया के 176 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। इनमें कई विश्वविद्यालयों में शोध कार्य भी करवाये जाते हैं। इनके अलावा कई संस्थाएँ विदेशों में हिंदी को बढ़ावा दे रहे हैं। जैसे कि ब्रिटेन में 'गीतांजलि बहुभाषी संस्था', यू.के. हिंदी समिति, अमेरिका में प्रयोग थियेटर ग्रुप हिंदी मंच, हिंदीज्म आदि। विभिन्न देशों में मौजूद हिंदी संस्थानों की सूचीhttp://www.vishwahindidb.com/default.aspxइस लिंक पर देखी जा सकती है। इन्हीं संस्थानों में भारत-मॉरिशस के संयुक्त उद्यम से स्थापित की गई संस्था है – विश्व हिंदी सचिवालय (http://www.vishwahindi.com/hi/default.aspx)। इसका मुख्यालय मॉरिशस में है। यह संस्था वर्ष भर विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से विश्व भर में स्थित हिंदी का प्रचार-प्रसार करती है। साथ ही यह दुनिया भर के विद्वानों, विश्वविद्यालयों, संस्थानों को साथ में जुड़ने, संवाद करने का एक प्लॉटफार्म तैयार की है। आप विश्व हिंदी सचिवालय के उक्त वेबसाईट पर जाकर अपनी संस्थानों और स्वयं को भी रजिस्टर्ड कर सकते हैं। इसके अलावा हिंदी के महत्व के मद्देनजर और भारत सरकार के प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र संघ ने हिंदी न्यूज प्रसारण (http://in.one.un.org/hindi) की शुरूआत की है। उक्त लिंक पर आप रोचक, सरस और धाराप्रवाह हिंदी में दुनियाभर के समाचार का लुत्फ उठा सकते हैं। साथ ही संयुक्त राष्ट्र संघ अपने मुख्य दस्तावेजों का हिंदी अनुवाद करके ऑनलाईन अपलोड करने की योजना पर कार्य कर रहा है। विदेश मंत्रालय, भारत सरकार ने हिंदी के बढ़ते व्यापक दायरे को देखते हुए और विश्व भर में हिंदी पेशेवर विशेषज्ञों की जरूरत को महसूस करते हुए अटल भाषांतर योजना (https://mea.gov.in/atal-bhashanter-yojana.htm) की शुरूआत की है। इसके तहत विद्यार्थियों को भारत सरकार की छात्रवृत्ति पर विश्व के मशहूर भाषा विश्वविद्यालयों में हिंदी से विदेशी भाषाओं और विदेशी भाषाओं से हिंदी में अनुवाद में अध्ययन का सुनहरा अवसर प्राप्त हो रहा है। आज वैश्विक परिदृश्य में यह स्थिति हो गई है कि महंगी से महंगी दरों पर पढ़ाई करने वाले भले ही बेरोजगारी झेल रहे हों परन्तु किफायती दरों पर हिंदी भाषा में विशेषज्ञता हासिल करने वाले दुनिया भर में आसानी से रोजगार हासिल कर सम्मानजनक जीवन जी रहे हैं।

स्पष्ट है कि हिंदी भाषा के प्रति पूर्वाग्रहों को छोड़ें, गर्व से हिंदी सीखें, हिंदी में बात करें, हिंदी में काम करें और अपने बच्चों को हिंदी सीखने के लिए प्रेरित करें।

हिंदी अधिकारी

सीएसआईआर-आईआईसीटी, हैदराबाद